International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

लोंजाइनस - उदात्त की अवधारणा

डॉ. शिवदयाल पटेल, सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बरपाली, जिला- कोरबा, छत्तीसगढ़
ईमेल आईडी patelshivdayal1@gmail.com

लोंजाइनस के विषय में प्रामाणिक जानकारी का अभाव है। लॉजाइनस जन्म से यूनानी थे। उनका समय ईसा की प्रथम या तृतीय शताब्दी माना जाता है। लोंजाइनस के प्रसिध्द ग्रंथ "पेरीइप्सुस", जिसका प्रकाशन 1554 में रोबेरतेल्लो ने किया। इसके कई अनुवाद मिलते हैं। यथा- "हाइट ऑफ इलोक्वेंस" (वाणी की पराकाष्ठा - 1662), "लाफ्टीनेस ऑर एलीगेंसी ऑफ स्पीच" (भाषा का लालित्य या उत्तुंगता) आदि। इसी के अनुरूप हिन्दी में "काव्य में उदात्त तत्व" डॉ. नगेन्द्र एवं नैमिचंद जैन की पुस्तकों में भी मिलता है। "पेरीइप्सुस" पत्र के रूप में पोस्तुमिउस तेरेन्तियानुस नामक एक रोमी युवक को संबोधित है, जो लोंजाइनस का मित्र या शिष्य रहा होगा। वस्तुतः पुनर्जागरण युग में 16वीं सदी में जब पहली बार "पेरीइप्सुस" कृति सामने आई, तब यह मत प्रचलित हुआ कि लोंजाइनस शास्त्रवाद से प्रभावित, तीसरी सदी में पालचीरा की महारानी जेनोविया के अत्यंत विश्वासपात्र यूनानी मंत्री थे। जिन्हें बाद में महारानी के लिए मृत्यु का वरण करना पड़ा। 1928 में स्काट-जेम्स ने इस मत को पुनःस्थापित करते हुए उन्हें पहला "स्वच्छंदतावादी आलोचक" कहा है। पश्चिम में लोजाइनस से पूर्व काव्यशास्त्रीय चिंतन की एक सुदृढ़ परम्परा का विकास प्लेटो तथा अरस्तु से ही माना जाता है। लोजाइनस ने इन दोनों की अवधारणाओं को आत्मसात् करके एक नए काव्यशास्त्रीय विचार प्रस्तुत किए। जहाँ प्लेटो के लिए साहित्य "उत्तेजक", अरस्तु के लिए "विरेचक", वहीं लॉजाइनस के लिए "उदात्त" था। उनकी यह अवधारणा इतनी युगांतकारी सिद्ध हुई कि आगे चलकर उसे शास्त्रवाद, स्वच्छंदतावाद, आधुनिकतावाद और यथार्थवाद से जोड़कर देखा गया। लोजाइनस से पूर्व काव्य की महत्ता दो रूपों में मूल्यांकित की जाती थी- (1) शिक्षा प्रदान करना, (2) आनंद प्रदान करना। "एरिस्टोफेनिस" सुधारवाद का पक्षधर था और "होमर" मनोरंजन का। अतः साहित्य (काव्य और गद्य) दोनों का आधार था- "To instruct, to delight, to persuade" अर्थात् शिक्षा देना, आह्लादित करना और प्रोत्साहित करना। उस समय तक काव्य में आलंकारिक, चमत्कारिक और आडम्बरपूर्ण भाषा-शैली को महत्व दिया गया था, भाव तत्व को नहीं। लोंजाइनस ने इस ओर ध्यान केंद्रित किया ।

लोंजाइनस का उदात्त तत्व

लोजाइनस ने उदात्त तत्व की स्वतंत्र एवं व्यापक व्याख्या नहीं की है, बल्कि उसे एक स्वतरू स्पष्ट तथ्य मानकर छोड़ दिया है। उनका मत है कि उदात्तता साहित्य के सब गुणों में महान हैय यह वह गुण है, जो अन्य छोटी-छोटी त्रुटियों के बावजूद साहित्य को सच्चे अर्थों में प्रभावपूर्ण बना देती है। उदात्त को परिभाषित करते हुए लोंजाइनस कहते हैं- "अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कर्ष ही औदात्य है। (Sublimity is always an _eminence bro and

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

excellence in language.) "उदात्त अभिव्यंजना का अनिर्वचनीय प्रकर्ष और वैशिष्ट्य है।" यही वह साधन है, जिसकी सहायता से महान कवियों या इतिहासकारों ने ख्याति और कीर्ति अर्जित की है।

उनका कहना है कि उदात्त का प्रभाव श्रोताओं के अनुनयन (मनोरंजन) (persuasion) में नहीं, बल्कि सम्मोहन (entrancement) में दृष्टिगोचर होता है। जो केवल हमारा मनोरंजन करता है, उसकी अपेक्षा वह निश्चय ही अधिक श्रेष्ठ है, जो हमें विस्मित कर सर्वदा और सर्वथा सम्मोहित कर लेता है। अनुनयन (मनोरंजन) हमारे अधिकार की चीज है, अर्थात् अनुनीत f(मनोरंजीत) होना ji या न होना हमारे हाथ में है, किंतु उदात्त तो प्रत्येक श्रोता को अप्रतिरोध्य शक्ति (irresistible force) से प्रभावित कर अपने वश में कर लेता है। सर्जनात्मक कौशल और वस्तुविन्यास पूरी रचना में आद्योपांत वर्तमान रहते हैं और क्रमशः शनैः शनैः उभरते हैं, किंतु बिजली की कौंध की तरह सही समय पर उदात्त की एक कौंध, पूरे विषय को उद्भासित कर देती है। वे कहते हैं कि कला में उदात्त किसी विशेष भाव या विचार के कारण नहीं, बल्कि अनेक "विरूध्दों के सामंजस्य" अथवा भावों के संघात सेउत्पन्न होता है। लोंजाइनस उदात्त की उत्पति के लिए केवल प्रतिभा को ही पर्याप्त नहीं मानते, उसके साथ ज्ञान (व्युत्पति) को भी आवश्यक बताते हैं। तात्पर्य यह है कि उदात्त नैसर्गिक ही नहीं, उत्पाद्य भी है। प्रतिभा के अतिरिक्त ज्ञान और श्रम से भी उसकी सृष्टि संभव है। लोंजाइनस ने कवि को वरीयता देते हुए रचना की भव्यता को रचनाकार से सम्बद्ध कर दिया। यह उनकी महत्वपूर्ण देन है। इन्हीं संदर्भों में “स्कॉट जेम्स” ने लोंजाइनस को प्रथम स्वच्छंदतावादी आलोचक माना है।

उदात्त के स्वरूप

उदात्त के स्वरूप को इस प्रकार से समझ सकते है- औदात्त्य अभिव्यक्ति की उच्चता व उत्कृष्टता का नाम है।

अभिव्यक्ति की उच्चता पाठक या श्रोता के तर्क का समाधान नहीं करती, अपितु उसे भावाभिभूत कर लेती है।

रचना का औदात्त्य पाठक को अनायास ही अपने प्रबल प्रवाह में बहा ले जाता है। किसी रचना का शिल्प उसके एक या दो अंशों से नहीं, बल्कि संपूर्ण रचना विधान से धीमे-धीमे प्रकाश में आता है। यदि उदात्त विचार अवसर के अनुकूल आ जाए तो एकाएक विद्युत की भांति चमक कर संपूर्ण विषय वस्तु को आलोकित कर देता है। क्षण भर में वक्ता का समस्त वाग्वैभव प्रकाशित हो जाता है।

लोंजाइनस का विचार है कि महान विद्वान, प्रतिभावान एवं उच्च चरित्रवान ही उदात्त रचनाएँ दे सकते हैं। वे कहते हैं, "औदात्त्य आत्मा की महानता का प्रतिबिंब होता है।" सच्चा औदात्त्य केवल उन्हीं में प्राप्य है। महान रचनाएँ वही दे सकता है, जिसकी कल्पना शक्ति उर्वर हो, जिसे मार्मिक स्थलों की पहचान हो और जो मानव हृदय में प्रवेश कर संवेदनाओं को पकड़ने की क्षमता रखता हो। जिनकी चेतना औदात्त्य एवं विकासोन्मुख है, जिनका जीवन तुच्छ एवं संकीर्ण विचारों के अनुसरण में व्यतीत होता है, वे कभी भी मानवता के स्थायी महत्व की रचना नहीं दे सकते।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उदात्त तत्व के स्रोत

लोंजाइनस ने उदात्त तत्व के विबेचन में पाँच तत्वों को आवश्यक माना है -

1. महान धारणाओं की क्षमता या विषय की गरिमा ।

2. भावावेश की तीव्रता ।

3. समुचित अलंकार योजना ।

4. उत्कृष्ट भाषा ।

5. गरिमामय रचना विधान ।

इनमें से प्रथम दो जन्मजात (अंतरंग पक्ष) तथा शेष तीन कलागत पक्ष (बहिरंग पक्ष) के अन्तर्गत आते हैं। उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन तत्वों का भी उल्लेख किया है, जो औदात्य के विरोधी हैं। इस प्रकार उनके उदात्त के स्वरूप-विवेचन के तीन पक्ष हो जाते हैं-

(1) अन्तरंग तत्व, (2) बहिरंग तत्व, (3) विरोधी तत्व।

1. महान धारणाओं की क्षमता या विषय की गरिमा

लोंजाइनस उदात्त के तत्वों में विचार की महत्ता को सबसे प्रमुख स्थान देते है। विचार की महत्ता तब तक संभव नहीं है, जब तक वक्ता या लेखक की आत्मा भी महान न हो। वे कहते हैं- "औदात्य महान आत्मा की प्रतिध्वनि" है। महान आत्मा का अर्थ- व्यक्ति के चरित्र, आचार, व्यवहार सभी महान हों। इसके लिए प्राचीन, श्रेष्ठ रचनाओं का ज्ञान आवश्यक है। उत्तम आदर्शों के अनुकरण से अनुकर्ता का पथ प्रशस्त तथा आलोकित होता है। अनुकरण बाहरी नकलमात्र नहीं है, बल्कि पूर्वजों की दिव्य भव्यता को अपने में समाहित करने का प्रयास है। वह उदात्त विचारों के लिए कल्पना और प्राचीन काव्यानुशीलन को आवश्यक मानते हैं। वह श्रेष्ठ रचना के लिए विस्तारपूर्ण होना आवश्यक समझते हैं। उनका मत है कि विषय में ज्वालामुखी के समान असाधारण शक्ति और वेग होना चाहिए तथा ईश्वर के जैसा ऐश्वर्य और वैभव भी।

2. भावावेश की तीव्रता

"पेरिहुप्सुस" के विभिन्न प्रसंगों में लोंजाइनस के कथनों से ज्ञात होता है कि उदात्त के लिए वे भाव की तीव्रता या प्रबलता को आवश्यक मानते हैं। भाव की तीव्रता के कारण ही वे होमर के "इलियट" को "ओदिसी" से श्रेष्ठ बताते हैं। भाव की भव्यता में भाव की सत्यता के अंतर्भूत होने से लोंजाइनस भाव के अतिरेक से बचने की राय देते हैं, जिससे भाव अविश्वसनीय (असत्य) न हो जाये अविश्वसनीयता आह्लाद में बाधक बनती है। ध्यान में रखने की दूसरी चीज, भाव का प्रयोग उचित स्थल पर होना चाहिए। लोंजाइनस अपना अभिप्राय प्रस्तुत करते हैं- "मैं विश्वासपूर्वक कहना चाहता हूँ कि उचित स्थल पर भव्य भाव के समावेश से बढ़कर उदात्त की सिध्दि का और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कोई साधन नहीं है। वह (भाव) वक्ता के शब्दों में एक प्रकार का रमणीय उन्माद भर देता है और उसे दिव्य अंतरप्रेरणा से समुच्छ्वासित कर देता है।"

3. समुचित अलंकार योजना

लोंजाइनस ने अलंकार का सम्बन्ध मनोविज्ञान से जोड़ा और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को व्यक्त करने के निमित्त ही अलंकारों को उपयोगी ठहराया। केवल चमत्कार - प्रदर्शन के लिए अलंकारों का प्रयोग उन्हें मान्य न था। वह अलंकार को तभी उपयोगी मानते थे, जब वह जहाँ प्रयुक्त हुआ है, वहाँ अर्थ को उत्कर्ष प्रदान करे, लेखक के भावावेग से उत्पन्न हुआ हो, पाठक को आनन्द प्रदान करे, उसे केवल चमत्कृत न करे। भाव यदि अलंकार के अनुरूप नहीं है, तो कविता-कामिनी का श्रृंगार न कर उसका बोझ बन जाएगा। वे कहते हैं- "प्रत्येक वाक्य में अलंकार की झंकार व्यर्थ का आडम्बर होगा।" इसलिए अलंकारों का प्रयोग वहीं होना चाहिए, जहाँ आवश्यक हो और उचित हो। आगे वे कहते हैं कि भव्यता के आलोक में अलंकारों को उसी तरह छिप जाना चाहिए, जैसे सूर्य के आगे आसपास के मध्दिम प्रकाश धूमिल हो जाते हैं।

4. उत्कृष्ट भाषा

उत्कृष्ट भाषा के अन्तर्गत लोंजाइनस ने शब्द-चयन और भाषा-सज्जा को लिया है। उन्होंने विचार और पद-विन्यास को एक-दूसरे के आश्रित माना है, अतः उदात्त विचार क्षुद्र या साधारण शब्दावली द्वारा अभिव्यक्त न होकर गरिमामयी भाषा में ही अभिव्यक्त हो सकते हैं। शब्द योजना में भाव प्रवणता शक्ति, ओज, गुण, सौंदर्य, गरिमा आदि श्रेष्ठ तत्व समाहित होने चाहिए। लोंजाइनस कहते हैं- "सुंदर शब्द ही सुंदर विचार को अभिव्यक्त कर पाता है ।" तुच्छ वस्तुओं की अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट शब्दावली वैसे ही अनुप्रयुक्त होती है, जैसे किसी छोटे बच्चे के मुंह पर रखा विशाल मुखौटा। लोजाइनस का मानना है कि सुंदर शब्द ही वास्तव में विचार को विशेष प्रकार का आलोक प्रदान करते हैं। यह तभी सम्भव है, जब उचित स्थान, उचित प्रसंग में उचित शब्दों का प्रयोग हो ।

5. गरिमामय रचना विधान

उदात्त का पंचम स्त्रोत है- रचना की गरिमा । इसका लक्षण है- उचित क्रम में शब्दों का विन्यास। वे कहते हैं, जिस तरह अंग अलग-अलग रहकर शोभाजनक नहीं होते, अपने-अपने स्थान पर आनुपातिक रूप से जुड़कर ही वे सौंदर्य की सृष्टि करते हैंय यही स्थिति उदात्त के रूप से जुड़कर ही वे सौंदर्य की सृष्टि करते हैं। यही स्थिति उदात्त के निष्पादक तत्वों की भी है। कैसे विचार के साथ कैसे भाव का मिश्रण उचित होगा, उसमें कौन-से अलंकार उपयुक्त होंगे, किस तरह के पद, किस क्रम से विन्यास होकर अभिष्ट प्रभाव उत्पन्न करेंगे, इन बातों का ठीक-ठीक आकलन किये बिना रचना में गरिमा नहीं आ सकती। उनकी दृष्टि में रचना का प्राण तत्व है- सामंजस्य, जो उदात्त शैली के लिए अनिवार्य है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

औदात्य के विरोधी तत्व लोंजाइनस ने उदात्त शैली के विरोधी तत्वों की चर्चा भी उदात्त के तत्वों के साथ ही की है। वे कहते हैं कि रूचिहीन, वाक् स्फीति, भावाडम्बर, शब्दाडम्बर, आदि उदात्त-विरोधी हैं। लेखक अशक्तता और बचने के प्रयास में शब्दाडंबर के शिकार हो जाते हैं। शब्दाडंबर उदात्त के अतिक्रमण की इच्छा से उत्पन्न होता है, किन्तु उदात्त का अतिक्रमण करने के बदले वह उसके प्रभाव को ही नष्ट कर देता है। बालिशता (बचकानापन) भव्यता का विलोम है। यह दोष तब आता है, जब लेखक रचना को असाधारण या आकर्षक या भड़कदार बनाना चाहता है, पर हाथ लगती है- केवल कृत्रिमता और प्रदर्शनप्रियता। भावांडबर या मिथ्याभाव तीसरा दोष है। जहाँ भाव के बदले संयम की आवश्यकता है, वहां जब लेखक भाव की अमर्यादित अभिव्यक्ति में प्रवृत होता है, तो भावाडंबर आ जाता है। अतः यह मानना पड़ेगा कि उदात्त का विश्लेषण और समग्र विवेचन भारतीय काव्यशास्त्र में उतना नहीं, जितना लोंजाइनस के 'पेरिइप्सुस' में। उसकी सबसे बड़ी देन यह है कि उसने दोषपूर्ण महान कृति को निर्दोष साधारण कृति से ऊँचा माना है, क्योंकि महान कृति में ही दोषों की सम्भावना हो सकती हैं।

संदर्भ

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा, मयूर पेपर बैक्स, पंद्रहवां संस्करण: 2016, पृष्ठ 86-122

2. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. सत्यदेव चौधरी, डॉ. शन्तिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नवीन संस्करण: 2018, पृष्ठ 215-218

3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान : प्रो. हरिमोहन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 2013, पृष्ठ 118-122